छुप–छुप आए श्याम .....

(तर्ज : चुप–चुप खड़े हो जरूर कोई बात है ...)

छुप–छुप आए श्याम, लेके ग्वाल बाल है ।
ऐसो री जसोदा मैया, तेरो नंदलाल है ।।
ग्वालों को संग लिए, घर में वो आ गए ।
माखन को खाए, मेरी मटकी गिरा गए ।
अंगूठा दिखाये चाले, टेढ़ी–मेढ़ी चाल है ।
ऐसो री यशोदा ...

देख री जसोदा मैया, श्याम तेरा मुरारी है ।
डगर चलत मेरी चुनड़ी बिगारी है ।
और दिखावे मोहे, आंखें लाल–लाल है ।
ऐसो री यशोदा ...

तोसे कहे तो, तू कान पर उतार देत ।
बार–बार दौड़, तू श्याम की बलैयां लेत ।
द्वार पे पुकार रहे, सभी बृजबाल हैं ।
ऐसो री यशोदा ...

बछड़े को खोल मेरी, गैय्या पिलाय गयो ।
माखन को खाय मेरो, छींको गिराय गयो ।
रोज–रोज देखो मेरे, घर को ऐसो हाल है ।।
ऐसो री यशोदा ...

बोली जसोदा कहाँ, श्याम को बताये दे ।
एक–एक मटकी की, सौ–सौ भराय दे ।
मारीयो न श्याम को, गरीबणी को लाल है ।
ऐसो री यशोदा ...